

Updesh - Bhartiya Vidya Bhavan - II

Date : 17th March 1975
Place : Mumbai
Type : Seminar & Meeting
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 08
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

जिसको की हम लोग कहते हैं कि काली उपासक है और कुछ कुछ नाम पचासो दे रखे हैं, सांख्य विद्या है और दुनियाभर की चीज़ बना रखी हुई है। उसके नाम पचासों हैं। उसको आप नौवी विद्या भी कहते हैं। उसको भूत-प्रेत विद्या भी कहते हैं। उसको लोग आज कल एक अवश्य कहते हैं कि कोई जिनिअस, इंटेलिजन्स उसका नाम बनाया रखा है। और ये सब भूतों के काम हैं। वो चीज़ जो महाकाली की शक्ति है, उसका विपर्यास कर लेते हैं या उससे मुँह मोड़ने से आ जाता है। या उसको अतिशय इस्तेमाल करने से भी आ जाता है। जैसे एक चीज़ से आप टूट जाते हैं तो दूसरी चीज़ से आप ठहर जाते हैं। जो मनुष्य, आज जो मेरी आप बात सुन रहे हैं, ये सब आपके सुप्त चेतन मन में, सबकॉन्शस माइंड में जाता है। सब वहाँ समा रहता है। वो वहाँ समाते जाती है और आप जितना सुप्त चेतन की ओर जाते हैं, उसमें जब हम बहुत उतरने लग जाते हैं, मतलब जब हम लिथार्जिक हो जाते हैं, हमारी अक्विटिविटी खतम हो जाती है, जिस वक्त हम कुछ भी अक्विटनन्स नहीं करते हैं, कुछ भी वैराग्य नहीं देते हैं, और संसार की सारी प्रलोभनों में पड़ते जाते हैं। इस तरह के शराब, औरतों के चक्कर, गंदे गंदे कामों में फँसना, इस तरह की हर एक चीज़ों में हम घुसने लग जाते हैं, अतिशय खाना, पीना, गालियाँ बकना और पान, सिगरेट आदि अनेक तरह की विषयों में जब हम लिप्त होते जाते हैं, जैसे आज कल के तरुण हैं।

उसी तरह से ये गंदे नाच, और सब तरह की पवित्रता जब हम खत्म कर के अपने माँ के प्रति हम, जैसे कि विलायत में है, माँ के प्रति भी वो गंदी दृष्टि से देख सकते हैं। इतनी उन में गंदगी आ गयी। नब्बे साल की औरत होगी और उसका रोमान्स चलेगा वो कोई बीस साल के लड़के के साथ और वहाँ के पेपर में भी ये आता है। उसमें भी शर्म नहीं उन लोगों को। रोज पहले ही पेपर पे आयेगा। देखते ही, बाप रे बाप! महाघोर पाप। इतने पापमय विचार लोगों के हैं। अपने यहाँ भी मैं देखती हूँ, कौन कौन ये औरतें जो हैं। उस दिन वो जौहर साहब की बीबी को देखा। मैंने कहा, 'ये तो बिल्कुल वेश्या जैसी बातें लिख रही है।' सारी गंदी गंदी बातें लिखना। खुले तौर से लिख देना। वो गंदी औरतों के फोटो टाँगना। और इस तरह से अपनी माँ को रास्ते पे बेचना। इस तरह के जो गंदे काम होते रहते हैं, उससे आदमी उस दूसरी दशा में जाता है। उसमें वो आदमी बातचीत करने में जरूर मधुर लगेगा। उसमें मिठास होगी। एक शराबी आदमी होता है अधिकतर। अधिकतर शराबी आदमी बड़ा ही ज्यादा दिल का बड़ा होता है। वो अकेला बैठ के शराब नहीं पियेगा। दस आदमियों को बुलायेगा। उनके साथ शराब पियेगा। हमेशा जो पियक्कड लोग होते हैं उनको ये तो परवाह नहीं होती कि मेरे बीबी-बच्चे घर में मर रहे हैं क्या? क्या हो रहा है? आओ भाई, तुम भी आओ। आओ, शराब पियो। कोई होशोहवास उनको नहीं रह जाता है। उनको इस चीज़ का खयाल नहीं रहता है। उनकी अगर माँ मर जाये, वो कफ़न के लिये पैसा लेने जायेंगे बाहर। किसी से भीख माँग के लायेंगे। क्योंकि उनके पास पैसा रहता नहीं। तो उसी रास्ते में अगर शराब की दुकान पड़ गयी तो माँ इधर में पड़ी रहेगी और वो रास्ते में बैठ के शराब पियेगा। याने जिसे सारा ही सार विचार टूट गया है। सारा ही धर्म टूट जाये। इस तरह की इंडलजन्स में जो पड़ता है, तो एक तो अक्विटनन्स एक्विस्ट्रम पे जो रहता है, जो कि मैंने कल

आपको बताया था, योगी लोगों की बात और आज ये दूसरे तरह के महागंदे लोग, जो सड़ जाते हैं। इनमें कीड़े पड़ जाते हैं। यही भूत है। कोई चीज़ सड़ जाने पे, मर जाने पे, उस में जिस तरह से कीड़े पड़ते हैं वैसे ही आप के अन्दर में भी इस तरह के कीड़े पड़ते जाते हैं। जिनको आप अँटीजिनी कहते हैं। अगेन्स्ट लाइफ। जिसको आप लोग व्हायरस इन्फेक्शन कहते हैं।

आपने सुना होगा संसार में व्हायरस इन्फेक्शन है। जिसको आप व्हायरस इन्फेक्शन कहते हैं वो भी यही कीड़े होते हैं। जो आपके कलेक्टिव सबकॉन्शस में, माने सामूहिक सुप्त चेतन जो चारो तरफ है, वहाँ से एकदम से चले आते हैं और उसके आने के कारण में संसार में जो मॉलिक्यूलर चेंजेस हो जाते हैं, माने हर एक जो अणु-रेणु है वो बदल जाते हैं। उसका जो घुमाना है, जो इस तरफ से घूमना चाहिये, वो उल्टे घूमने लग जाता है। जो स्वस्तिक हमारे गणेश जी का है, उसके उल्टा स्वस्तिक घूमने लग जाता है और जब वो उल्टा घूमने लग जाता है, सारा मॉलिक्यूलर चेंज हो जाता है। व्हायरस इन्फेक्शन आ जाता है। संसार में फटाक् एकदम लोग, उनको चक्कर आ जाती है, गिर जाते हैं, उल्टियाँ हो जाती हैं। कोई लोग पागल हो जाते हैं। आपने सुना होगा की उनके रेटिना जो है उनका डिटॅचमेंट हो जाता है और उनको दिखायी नहीं देता। उसके बाद वो अँधे हो जाते हैं और इस तरह की पचासों चीज़ें। वो जो आती है संसार में और जो ऐसे कार्य करती है, वो तो कोई कंट्रोल नहीं आती। वो आती है, अपने आप से एकदम काफ़ी सारे मरे हुये जीव आते हैं संसार में, असर कर जाते हैं और खत्म हो जाते हैं। उनके असर लोगों पे आ जाते हैं। यही व्हायरस इन्फेक्शन है। लेकिन बहुत से ऐसे लोग संसार में हैं, कि जब कोई मर जाता है, खास कर अगर कोई बड़ा दुष्ट मरा हो, तो उसकी खोपड़ी पर काबू कर लेंगे या उसकी हड्डियों पे काबू कर लेंगे। उसके स्मशान तक जायेंगे। उसकी कब्रें खोदेंगे। उसमें से उसको निकाल लेंगे और उस पर एक प्रेतविद्या की तरह हावी हो जायेंगे। उसके मंत्र करते हैं। उसका नाम जपते हैं। उसको ये कर के, वो कर के उस को अपने काबू में करते हैं। हम लोग असल में मरते थोड़ी ना हैं। थोड़ा सा हिस्सा हमारा मर जाता है और बाकी का हिस्सा, ट्रान्सपरन्ट सा संसार में सब दूर विचरण करते रहता है। अब वो मरे हुये लोगों के बीच सात लोग हैं, सात लोग वहीं ठान रहते हैं। अब जो लोग पार हो गये हैं वो देवलोक में रहेंगे। ये कभी भी किसी आदमी की तहकी में नहीं घुसने वाले। चाहे अपना खुद का लड़का मर गया हो। अपनी खुद की बीबी मर गयी हो। कभी उस साइकी के अन्दर नहीं घुसेंगे। लेकिन उस के नीचे में भी, देवयोनी के नीचे में भी बहुत से लोग हैं, राक्षस हैं।

जो लोग राक्षस योनि के हैं, उस राक्षस योनि के लोगों को ये इच्छा होती है कि संसार में आओ और अपना राक्षसीपन दिखाओ। तो वो संसार में आते हैं कुछ तो रूप धारण कर लेते हैं मनुष्य के जैसा और कुछ लोग जो हैं ऐसे ही विचरण करते रहते हैं। उन लोगों पे ये लोग हावी रहते हैं। और उनको आपके आज्ञा चक्र से नाभि चक्र से आपके अन्दर डाल देते हैं। इसलिये कलयुग जो है मिक्श्चर है सारे, मिश्रण हो गया। साधु, संतों के भी आज्ञा चक्र में ये घुसा देते हैं। अब आपको पता ही नहीं चलता कहाँ घुसाते हैं, कब घुसाते हैं। जब तक आपको कैंसर नहीं हो जाता है, जब तक आप फिजीकली प्रॉब्लेम में न आ जाये, आपको यही पता नहीं होता है कि भूत कहाँ से आ गये। इनकी कोई ये समझ में ही नहीं आता है, कि हमें ये बीमारी कैसे हो गयी? बहुतों से लोग आते हैं, 'माताजी, मुझे रात में नींद नहीं आती। मेरा दिमाग खराब हो गया। मुझे बड़े भयंकर स्वप्न आते हैं। बड़ा डिप्रेशन रहता है। सब कुछ है, मैं बड़ा डिप्रेस्ड रहता हूँ। समझ में नहीं आता है क्या है?' फिर दूसरा आ के बताता है, 'साहब मेरी बीबी

इतनी विचित्र है, उसका मेरी समझ में नहीं आता है कि हर समय वो मेरे उपर क्यों बिगड़ी रहती है?’ फिर पता हुआ कि वो बिल्कुल राक्षसीन जैसी रहती है। इस तरह की बहुत सी किताबें लिखी हैं जिस में उन्होंने इस शक्ति का वर्णन किया हुआ है। उसमें से एक किताब है, एक्झॉसिस्ट। बड़ी गंदी तरीके से लिखी है वो। लेकिन उसमें लिखा है, ग्यारह साल की लड़की जो है, उस लड़की का किस तरह से मन विक्षुब्ध हो गया। इस तरह की भी बात लिखी है। बहुत सी ऐसी बातें संसार में आ रही है, लोग देख रहे हैं कि हजारों के पास सिद्धियाँ आ गयी।

माने, आप ऐसा करें, आकाश से एकदम अंगूठी ला कर रख दी। आपने सोचा, अहाहा! महात्माजी का क्या कहने! अंगूठी ला के दे दी। महात्मा जी के चरणों में चले। महात्मा जी ने एक भूत आपके अन्दर भर दिया उसके साथ। दूसरे दिन आप बीबी का जेवर चुरा के ले गये महात्मा जी के चरणों में डाल दिये। आपने ये नहीं सोचा, महात्मा जी ने मुझे अंगूठी दी। मेरे नौकर को क्यों नहीं दी भाई? सारे संसार के प्रॉब्लेम क्यों नहीं हल करते। ये तो कम से कम करें। बड़े भारी भगत हो गये, अहाहा, गुरुजी महाराज! क्या कहने आपके! अंगूठी आपने हमें दे दी। क्या कहने! बड़े बड़े इस चक्कर में घुमते हैं। वो उनकी कमजोरियाँ हैं। वो अंगूठी दे दे। अंगूठी उनको इंप्रेस कर गयी। अंगूठी लेने जाते हैं। और ये रईसों को और बड़े बड़े पदाधिकारियों को अंगूठियाँ क्यों दे रहे हैं? क्यों नहीं इन गरीबों को देते हैं? ये कभी नहीं होगा।

फिर वो दूसरे तरह के होते हैं वो अपने को हिप्नोटाइज करते हैं। वो ऐसी आपसे मीठी, मीठी, मीठी, मीठी बाते करेंगे। जैसे बहुत से औरतों को कहते हैं कि, ‘मैं आपके पूर्वजन्म का पति था।’ अब औरतें इतनी गधी होती हैं, उनकी समझ में नहीं आता कि पूर्वजन्म में होगा तो होगा। चूल्हे में गया। अभी जो बैठा हुआ है, उसको छोड़ के इसके पीछे में क्यों भाग रहे हैं? खास कर जो औरतें फ्रस्ट्रेटेड होती हैं, जिनके आदमी बदमाश होते हैं। इधर-उधर भागते हैं। उनके औरतों को ये आदमी बड़ा अच्छा लगता है। लग गये उसके पीछे में। ‘अब वो मेरे गुरु महाराज। अहाहा!’ मुझे तो उन्होंने बिल्कुल, मेरी हालत खराब कर दी। ये नहीं जानती की उनके अन्दर सेक्स की दबी हुयी प्रवृत्तियाँ हैं। उसको उभार कर के, उसको संजो कर के आप पे ऐसा काम कर रहे हैं और आप से रुपया-पैसा ले रहे हैं। ऐसी मैंने केसेस देखी हैं, औरतों ने अंगूठियाँ क्या, चूड़ियाँ क्या, वो सब दे दी। ये एक तरह की(अस्पष्ट)।

दूसरी चीज़ है आपको डोरा बांधने की। आप डोरा बांध दिया। ये तो बहुत सस्ता मामला है। एक पैसे का डोरा बारह रुपये में बाँध दिया। आपने लगा लिया। डोरा आपके गले में, गये आप। ये सब से आसान तरीका है।

तिसरा तरीका है कि आप से कहेंगे कि मंत्र जपे। एक और है महाशय। उनका की आप एक शृंग है उसको जपो। अब वो महाशय लगे शृंग शृंग जपने। देखा क्या कि उनको ट्रान्स आ गया। ट्रान्स में चले गये। कहने लगे कि ये तो जिनिअस हो गये। इनका ब्रेन बढ़ गया। इनके अन्दर एक भूत आ गया। अब वो शायद हो सकता है कि इनसे ज्यादा बुद्धिमान हो। हो सकता है। लेकिन कूकेड होगा बहुत बड़ा। वो इस आदमी को इस्तमाल करेगा और जब जायेगा तो उसके प्राण ले कर। उसको खत्म कर के। तो उन्होंने कहा, आप मंत्र जपो। आपने मंत्र जपा, राम, राम कहा। राम नाम का प्रभु नहीं। राम नाम का भूत कहीं होगा वो आपके अन्दर आयेगा। फिर आपसे उन्होंने कहा, कि आप पाँच बजे के करीब हमारा इंतजार करियेगा। उस वक्त हम आपका ये ठीक करेंगे। आपको जुड़ी आयेगी पाँच

बजे। आप सोचेंगे आ गये मेरे अन्दर देवता। आपने सोचा मेरे अन्दर भगवान आ गये। आपने सोचा, अहाहा, मैं कितना बड़ा आदमी हो गया। आप क्या भगवान आने लायक आप हैं! क्या आपके अन्दर भगवान आ जायें, ऐसे आप शक्तिशाली हैं, कि आप के अन्दर भगवान आ जायें। उसके बाद आपकी तबियत ठीक हो गयी। क्योंकि वो दूसरा आदमी आपके अन्दर आ गया। आप से वो चीज़ दबा दी। आपने सोचा कि, 'अहाहा, कितने अच्छे हम हो गये!' ऐसे स्पिरिच्युअल, बड़े भारी लीडर, वहाँ लंडन शहर में तो इतने भरे हुये हैं, जिसकी कोई हद नहीं। ईसामसीह ने इसके खिलाफ़ इतनी बुलंद आवाज उठायी थी, नानक जी ने भी हिन्दुस्तान में इसके बाद बहुत इसके विवरण किया है, बहुत नानक जी ने कहा है। इसलिये सीख लोग नानक जी को मानते नहीं। नानक जी को मानने वाले लोग जो हैं, बहुत लोग हैं लेकिन सीख लोग नहीं। जैसे सिंधी लोग भी मानते हैं नानक जी को। लेकिन सिंधी लोगों में इतना गुरुओं का चक्कर है, इसकी कोई हद ही नहीं। क्योंकि उनके पास पैसा होता है। जहाँ पैसा वहाँ ये भूत पहले पहुँचेंगे। उनको तो उनकी सूँघ लगती है। उसकी खुशबू आती है। इसके पास पैसा है, चलो। हर एक पैसे वाले के पीछे दो-चार तो ऐसे लगने ही हैं। और पैसे वाले, उनको चाहे मन में ये लगता हो कि मैंने गलत तरीके से पैसा कमाया है या कोई बात हो। वो सोचते हैं कि चलो, उसको थोड़ा सा पैसा दे दो। अपना भी पाप मोक्ष हो जायेगा। वो पता नहीं कि उससे भी कितना अधिक पापी बैठा हुआ है, उसको पैसा देने से तेरा पाप नष्ट नहीं होने वाला। तो उसको उन्होंने दो-चार लाख रुपया दे दिया। बाबाजी, बाबाजी, बाबाजी! बाबाजी गये!

एक एक बाबाजी के किस्से सुनायें तो आप लोग कहियेगा कि बाप रे बाप! किस चक्कर में हम हैं। अभी सितारा देवी ने एक किस्सा सुनाया। एक बाबाजी थे। किसी रईस के घर में रहते थे। मैं जाती थी, तो मैं भी उनके यहाँ जाया करती थी ऐसे। एक दिन मेरे पास पुलिस वाले आये। कहने लगे कि, 'उनके उसने सात लाख रुपये मारे हैं। आपसे भी रुपया मारा क्या?' मैंने कहा, 'मैंने तो उनको कुछ खास दिया नहीं। हाँ भाई, थोड़ा बहुत दे देती थी मैं।' उसके बाद में पता हुआ, सात लाख रुपये मारे थे, तो पेपर में आया था, कि उनको पकड़ा गया और वो जेल में चले गये। उसके कुछ दिन बाद मुझे मिले। सात साल बाद। तो वैसे के वैसे हट्टे कट्टे। कुछ उनको हुआ नहीं था। मैंने उनको पूछा, 'कब आये?' मैंने उनसे ये नहीं पूछा, जेल से कब आये? वो खूब जोर जोर से हँसने लगे। इतने बेशर्म हैं वो। उनको कोई शर्म नहीं होता। बेशर्म है वो। उनको जन लज्जा, या कोई लज्जा नाम की कोई चीज़ नहीं। उनको जेल में रखा था फिर भी बेशर्म जैसे वही काम कर रहे थे। उससे तो एक चोर अच्छा है। जो कहता है कि, 'मैं चोर हूँ, मैं चोरी करता हूँ।' वो जेल में जाता है, वहाँ से ठीक हो के आता है। उसका वो शर्म महसूस करता है। वो सोचता है कि देखो, मैंने कितना गंदा काम किया है। लेकिन ये लोग तो सोचते हैं कि, 'अच्छा है, मैंने ठगा इन लोगों को। मेरे पास अकल ज्यादा थी, इसलिये मैंने ठग लिया।'

हमारी यूपी में एक नटवरलाल कर के एक महाशय हैं। वो भी हमारे श्रीवास्तव ही हैं। महापक्के, छटे हुये चोर हो ऐसे चोर हैं। ऐसी उनकी कमाल है कि उनको कोई भी आदमी जेल में एक महिने के उपर रखने नहीं देता। एक दिन ऐसा हुआ कि एक जेलर साहब के यहाँ मैं गयी थीं। उन्होंने कहा कि, 'नटवरलाल को आप देखना चाहते हैं?' मैंने कहा, 'मैं देखूंगी। मैं मिलूंगी। देखू तो कैसा आदमी है।' मैंने देखा कि वो निहायत बेशर्म आदमी है। इतना वो बेशर्म है कि वो कुछ भी कर सकता है, जिसको शर्म ही न हो किसी की। धर्म ही जिसके अन्दर नहीं हो। किसी तरह का काम कर सकता है। तो भी उसमें इतनीअन्दर थी कि मैं गयी तो उसने मेरे सामने आँख नहीं झुकायी।

कहने लगे, 'माँ, मैं आपके सामने आँख नहीं झुकाऊंगा।' लेकिन ये तो इतने बेशर्म होते हैं कि मेरे से भी आँख मिलाने की कोशिश करते हैं। इतने बेशर्म होते हैं। महाबेशर्मों की दुनिया में रहते हैं और सब बेशर्म आपस में मिले रहते हैं। कोई उनको लज्जा नहीं आती। उनको जेल में डाल दो, उनको मना कर दो कि बम्बई नहीं आने का। मरो वहाँ पे पूना में। तो भी बेशर्मी करते रहते हैं। और उनके शिष्य भी इतने बेशर्मी से बात करते हैं। इतने गंदे लोग होते हैं। कहते हैं, एक तो लेडी कहने लगी कि, 'उससे तो मेरी शादी हो गयी।' 'शादी हो गयी? अरे, तुम्हारे पति यहाँ बैठे हुये हैं। तुम्हारे बाल-बच्चे बैठे हैं। इतने बड़े घर की औरत हो। तुमको शर्म नहीं आती? तुम्हारी उनसे शादी कैसे हो गयी?' 'वो तो मेरे पूर्वजन्म के पति है।' मैंने कहा, 'कैसे पता?' 'वो कह रहे थे।' मैंने कहा, 'वो कहे तो क्या ब्रह्मवाक्य हो गया। ये कहने के लिये क्या लगता है दुनिया में बताओ!' सोचना चाहिये, मनुष्य को हमेशा सोचना चाहिये, कि आप जिसको गुरु मान रहे हैं उसको पवित्रता है या नहीं? अगर उसके अन्दर पवित्रता नहीं तो उसके आगे झुकने की क्या जरूरत है! उसके चरणों में जाने की क्या जरूरत है? जो आदमी आपको गंदी बातें सिखाता है, धर्म के नाम पे सेक्स सिखाता है, वो आदमी कभी भी पवित्र नहीं हो सकता है। नहीं हो सकता। नहीं हो सकता। इसको आप लिख के रखें। जिस आदमी को औरतों में इंटरैस्ट है, वो आदमी आपका गुरु कैसे होगा? सब धंधे करो और गुरु बनो ये कौन सा भाई तरीका! मैंने नहीं जाना! इस तरह के गुरु आज कल हजारों निकल आये हैं। इसलिये ये जो शक्तियाँ हैं, इससे बहुत बच के रहने की जरूरत है। आज कलयुग में योगी तो एक बार पार हो ही जाते हैं। उनके अन्दर हृदय शक्ति में भरा जा सकता है। उनको पार कर सकते हैं और जब वो पार होते हैं तब काफ़ी पवित्र जीव होते हैं। लेकिन इस बदमाशी में घुसने वाले लोगों को आप क्या कह सकते हैं? क्या उनको मैं पार करा सकती हूँ? कोई लोग कहते हैं कि, 'माताजी, ये लोग कहते हैं कि आप तो किसी गुरु को नहीं मानती।' मैंने कहा, 'कोई सच्चा गुरु हो उसको मैं मानूंगी। वो तो मुझे भी मानेगा। लेकिन जो दुर्जन है, तो उसे मैं कैसे कहूँ कि ये गुरु है भाई? तुम क्यों कि मानते हूँ इसलिये मैं उनको गुरु कहूँ?' कोई तुम्हारा कल्याण उसने किया? वो सिर्फ सोशियो-इकोनॉमिक अॅक्टिविटीज कर रहे हैं कि, 'साहब, आप हमारे आश्रम में आईये। सारा रुपया पैसा जमा कर दीजिये आप और आप हमारे यहाँ रहिये। पता हुआ कि आप ट्रान्स में चले जा रहे हैं और अस्सी साल की बुढ़िया औरत अपने सर पे हीरा बाँध के बैठी हुई है। कहने, 'मैं जगन्माता!' दूसरों का पैसा खड़ा कर के हीरे लगा के बैठेंगे। उसको शर्म नहीं आती? कोई उसके पति का पैसा था या बाप का पैसा था। आप संन्यास ले के बैठी हुई हैं। क्या जरूरत है आपको हीरे लगा के बैठने की? आप लोगों को इस बात का पता होना चाहिये कि कलयुग में सब से बड़ा विरोध इसी शक्ति के कारण हुआ है। ये जो गंदी शक्ति, मैली शक्तियाँ संसार में फैली हुई हैं। जिसके कारण ये गुरुडम आदि फालतू की चीज़ें और ये आश्रम आदि फालतू की चीज़ें इकट्ठी हो गयी।

उसी के कारण, उसी वजह से आप सहजयोग हमारा पनप ने का है, घर-घर में, हर दरवाज़े पर, हर मंदिरों में। आपके घर के मंदिर, आपके घर में भी ये भूत बैठे हुये हैं, जहाँ जाईये वहाँ। और ये सिर्फ साधारण भूत नहीं हैं। ये राक्षसों के अवतार हैं। ये भी जान लीजिये। सोलह राक्षस, महिषासुर, मुक्तासुर, भस्मासुर, नरकासुर, सब पैदा हुये हैं। आपने और भी जिन जिन के नाम सुने हुये हैं। सारे के सारे आज पैदा हुये हैं और राक्षसिनियाँ पैदा हुयी हैं। अपने को कहती हैं कुछ। एक होलिका पैदा हो गयी। आप को क्या पता? वो कहती कि मैं फलानी माँ हूँ। चले आप चरण पे। उनकी कब की पहचान है? राक्षसों की एक पहचान है कि जब आप उनसे बात करियेगा, देखियेगा कि

उनकी आँख छोटी हो कर एकदम बिल्ली जैसी लुप्त हो जाती है। आपको मैं सीक्रेट बताती हूँ। जब आप किसी आदमी से बात करते वक्त, उसकी आँख की जो पुतली होती है, काली वाली वो छोटी हो कर के लुप्त हो जाये तो सोचना कि ये राक्षस है। तो ऐसे राक्षस को अगर गुरु बनाना है, तो आप भी राक्षस हो जायें। उससे कम आप नहीं। और इसलिये सहजयोग के लिये बहुत जरूरी है, कि इस बात को आप जानें, कि इस तरह के बहुत से राक्षस संसार में आ कर के और आप को बेवकूफ बना कर के, और पैसा कमा रहे हैं। वो कमायें, मैं कहती हूँ, स्मगलिंग करें, जो करना है करें, लेकिन आपकी कुण्डलिनी को न छुयें। आपकी कुण्डलिनी को ऐसा ठिकाना कर देते हैं। बहुत से लोगों को मैंने देखा है, कि उनकी कुण्डलिनी का ये हाल हो जाता है, कि वो बिल्कुल ऊपर आ कर के धड़ाम् से गिर जाती है। फिर उसको ऊपर बाँधती हूँ, फिर ऊपर चली जाती है। पता हुआ कि फलाने गुरु महाराज के पास गये और उन्होंने अडतीस रोल्स रॉईस खरीद कर के घुमा रहे हैं आराम से। आपकी कुण्डलिनी ठिकाने कर दी। आपका उत्थान नहीं हो सकता। आप पार नहीं हो सकते। आपका कल्याण नहीं हो सकता। अनेक ऐसे उदाहरण हमारे यहाँ हुये हैं।

अभी अभी, रिसेन्टली, एक साहब हमारे आगे बहुत आग्र्य करने लगे, अपने गुरु के लिये। मैंने कहा, 'बेटे, बैठ जाओ। तुम अपने गुरु के लिये क्या आग्र्य कर रहे हो?' नहीं सुना। उसके बाद खड़े खड़े कहने लगे, 'मैं ऐसे हिलने लगा।' मैंने कहा, 'ये क्या? अपने गुरु को बुलाओ मेरे सामने। क्यों हिल रहे हो?' उस वक्त एक पागल आदमी सामने बैठा था। वो भी हिल रहा था। मैंने कहा, 'देखो, ये भी अभी पागल खाने से चला आ रहा है और तुम क्यों हिल रहे हो? दोनों में कोई अन्तर नहीं। दोनों हिल रहे हैं। इसी से साक्ष है।' तो भी जरासा बोलने को हुये तो भी एकदम उनका बदन एकदम से जम गया। जब उनका बदन जम गया तो कहने लगे, 'माँ, मैं तो जम गया।' मैंने कहा, 'अच्छा, तुम्हारे गुरु का नाम बताओ।' उसके गुरु का नाम लिख कर के उसको १०८ जूते मारने के साथ वो छूट गया। ये साक्षात् है। सहजयोग एकदम प्रॅक्टिकल चीज़ है। मैं जो भी बोल रही हूँ वो बात आप सिद्ध कर सकते हैं। जैसे लॅबोरेटरी में आप सिद्ध करते हैं। कोई हवाई बात मैं नहीं कर रही हूँ। आप सब के सामने इसका साक्षात् दे सकते हैं कि कौन सा गुरु सच है और कौन सा गुरु झूठ है। उसके फोटो पर से आप बता सकते हैं।

गगनगड महाराज के पास जब जाने का था तो सब ने ऑब्जेक्शन किया कि, 'माताजी, आप किसी गुरु के पास नहीं जाते हैं।' मैंने कहा, 'ये तो गुरु ही हैं, असली में गुरु हैं।' कहने लगे 'उनसे वाइब्रेशन्स नहीं हैं।' मैंने कहा, 'उनके साथ का जो फोटो है उसको हटाओ।' फोटो हटाते ही उनके वाइब्रेशन्स देख के, 'हाँ, भाई, वाइब्रेशन्स आये।' फिर गड़ तक जाने तक सब लोग मुझे परेशान कर रहे थे। 'माताजी, कहाँ साथ में चढ़ के जायेंगे?' मैंने कहा, 'चलो, तुम। देखो तो सही।' वहाँ से इतने जोर से वाइब्रेशन्स आने लगे। तब सब की आँख खुल गयी। 'ये बात है!' वो भी हमें पहचानते हैं, हम भी उन्हें पहचानते हैं। क्योंकि हम एक सटल से आये हैं। एक ही चीज़ के ऊपर। आप भी देख लेंगे, जब आप पार हो जायेंगे, आपके अन्दर से वाइब्रेशन्स आने लग जायेंगे। आप भी पहचान लेंगे कि कौन आदमी पार है और कौन नहीं है। किस की कुण्डलिनी कहाँ फँसी हुई है? किस के चक्र कहाँ फँसे हुये हैं? किस को क्या प्रॉब्लेम हैं? सब आपस में आप चेकिंग करना शुरू करेंगे। सहजयोगी से ही लाइट आने वाली है। सहजयोग से ही आप जानने वाले हैं, कि कौन आदमी साधु है, कौन असाधु है? आपका हाल क्या है? आपका प्रोग्रेस क्या है? आप कहाँ जा रहे हैं? आपको कैसे उठना है? सिर्फ सहजयोग से ही आप इसे जान

सकते हैं। यही एक ज्ञान का मार्ग होता है और कोई नहीं। जब तक आपके अन्दर वाइब्रेशन्स नहीं आते सारी बातचीत, बातचीत ही रह जाती है।

ये जो मैली विद्या है, इसके बारे में मैंने लेक्चर दिया था एक बार। करीबन डेढ़ घण्टे का लेक्चर था। आप लोगों को और अगर इंटरैस्ट हो तो इसे सुन लीजिये। मैं तो उसको सुन सुन के और कह कह के, तंग आ गयी हूँ। सिर्फ कहने का ये है कि आप के अन्दर भी एक परम शक्ति है। जो इन दोनों शक्तियों के बीचोंबीच खड़ी है। वो दोनों शक्तियों को ही पूरी तरह से फिर से ढक सकती है। ये गंदी शक्तियाँ हैं दोनों। जिसके कारण हमारे अन्दर तकलीफ़ हो गयी है। इस से की इगो बन गया है, सुपर इगो बन गया है। ये उसी तरह से है जैसे कि फ़ैक्टरी में, शक्ति को इस्तेमाल करने से आप के अन्दर जैसे एक धुँआ होता है। उस धुँआ को भी कुण्डलिनी शक्ति शांत कर देती है। इतना ही नहीं वो इन दोनों ही चैनल्स को, जिसे इड़ा और पिंगला नाड़ी कहते हैं। पहले आपको मैंने पिंगला नाड़ी कल बतायी थी। आज इड़ा नाड़ी बतायी, जो हृदय चक्र पे से जाती है। अधिकतर कैंसर की बीमारी, इस दूसरी मतलब जिसको कि इड़ा नाड़ी कहना चाहिये उससे होती है। असर उसका दोनों तरफ़ आता है, क्योंकि दोनों नाड़ियाँ ऐसी जुड़ी हुयी है। इसलिये इस नाड़ी का भी असर इस नाड़ी पे भी आ सकता है। पर ज्यादा कैंसर की बीमारी लेफ्ट हैण्ड साइड पे प्रवाह से होती है। इसलिये कलयुग में क्योंकि इतने राक्षस एकसाथ आ गये हैं। कैंसर की बीमारी से आ गये हैं। पागलपन भी आ गया। लोग अस्वस्थ भी हो गये। इसे नींद भी नहीं आती। परेशान भी हो गये हैं। बहुत संतप्त हो गये हैं। कलह हो रहा है। झगड़े हो रहे हैं। आपस में परेशानी हो रही है।